# गहरे समुद्र की मछलियों की सेल लाइन्स जारी

रामकृष्ण मिश्रा/ब्यूरो
रिपब्लिक रैनैसां

लखनऊ। आईसीएआर-नेशनल ब्यूरो ऑफफिश जेनेटिक रिसोर्सेज , कोच्चि ने मेसोपेलेजिक और गहरे समुद्र की मछलियों से प्राप्त छह नई सेल लाइन्स सफलतापूर्वक विकसित की हैं। यह भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के डीप ओशन मिशन परियोजना का परिणाम है, जिसे एन बी एफ जी आर में कार्यान्वित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने किया, और उन्होंने औपचारिक रूप से यह नई सेल लाइन आईसीएआर -एन बी एफ जी आर के निदेशक को सौंप दी। इस अवसर पर कई जाने-माने वैज्ञानिक उपस्थित थे, जिनमें डीप ओशन मिशन के मिशन निदेशक डॉ. एम. वी. रमना मूर्ति, इंडियन नेशनल सेंटर फॉर ओशन इंफॉर्मेशन सर्विसेज के निदेशक डॉ. टी.एम. बालकृष्णन नायर, और सेंटर फॉर मरीन लिविंग

रिसोर्सेज एंड इकोलॉजी के निदेशक डॉ. आर. एस. महेशकुमार शामिल थे।डॉ. रविचंद्रन के अनुसार, यह पहल डीप ओशन मिशन के व्यापक उद्देश्यों के अनुरूप है, जिसका लक्ष्य गहरे समुद्र के जैव-संसाधनों की खोज, संरक्षण और सतत उपयोग के लिए देश की क्षमता को बढ़ाना है - जिससे एक सुदृढ़ और सतत ब्लू इकोनॉमी ( नीली अर्थव्यवस्था) के विकास में योगदान मिल सके।

एन बी एफजी आर के निदेशक डॉ. काजल चक्रबर्ती के अनुसार, यह उपलब्धि समुद्री जैव प्रौद्योगिकी को मजबूत करने और गहरे समुद्र के उन जैव-पारिस्थितिकी तंत्रों से गहरे समुद्र की मछलियों के आनुवंशिक संसाधनों को संरक्षित करने के भारत के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जिनकी अभी तक बड़े पैमाने पर खोज नहीं हुई है। उन्होंने गहरे समुद्र की मछलियों की जैव विविधता और आनुवंशिक संसाधनों पर अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता पर भी प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में गहरे समुद्र की मछलियों की नई स्थापित सेल लाइनों को एन बी एफ जी आर के राष्ट्रीय भंडार में औपचारिक रूप से जमा किया गया, साथ ही उनसे संबंधित वैज्ञानिक प्रकाशन भी प्रस्तुत किए गए, यह गहरे समुद्र की जैव विविधता पर अनुसंधान के क्षेत्र में भारत की बढ़ती क्षमताओं का प्रतीक है। इसके अलावा, सहयोगी अनुसंधान पहलों को बढ़ावा देने के लिए आईसीएआर -एन बी एफजी आर द्वारा इंडियन नेशनल सेंटर फॉर ओशन इंफॉर्मेशन सर्विसेज सेंटर फॉर मरीन लिविंग रिसोर्सेज एंड इकोलॉजी और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटियोरोलॉजी के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

# भारत को मिली बड़ी वैज्ञानिक सफलता

## गहरे समुद्र की मछलियों से विकसित हुईं छह नई सेल लाइन्स, ब्लू इकोनॉमी को मिलेगा नया बल

**जन एक्सप्रेस/एजेंसी। कोच्चि**

भारत ने समुद्री जैव प्रौद्योगिकी और गहरे समुद्र अनुसंधान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। ICAR-नेशनल ब्यूरो ऑफ़ फ़िश जेनेटिक रिसोर्सेज, कोच्चि ने मेसोपेलेजिक एवं गहरे समुद्र की मछलियों से प्राप्त छह नई सेल लाइन्स सफलतापूर्वक विकसित की हैं। यह उपलब्धि भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के महत्वाकांक्षी 'डीप ओशन मिशन' परियोजना के अंतर्गत हासिल की गई है। इस विशेष कार्यक्रम का उद्घाटन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने किया। उन्होंने औपचारिक रूप से नई विकसित सेल लाइन्स ICAR-NBFGR के निदेशक डॉ. काजल चक्रबर्ती को सौंपते हुए इसे भारत की समुद्री अनुसंधान क्षमता के लिए एक ऐतिहासिक कदम बताया। कार्यक्रम में डीप ओशन मिशन के मिशन निदेशक डॉ. एम. वी. रमना मूर्ति, इंडियन नेशनल सेंटर फॉर ओशन इंफॉर्मेशन सर्विसेज के निदेशक डॉ. टी.एम. बालकृष्णन नायर तथा सेंटर फॉर मरीन लिविंग रिसोर्सेज एंड इकोलॉजी के निदेशक डॉ. आर. एस. महेशकुमार सहित कई वरिष्ठ वैज्ञानिक मौजूद रहे। डॉ. रविचंद्रन ने कहा कि यह पहल डीप ओशन मिशन के व्यापक उद्देश्यों के अनुरूप है, जिसका लक्ष्य गहरे समुद्र के जैव-संसाधनों की खोज, संरक्षण और उनके सतत उपयोग के लिए भारत की क्षमता को मजबूत करना है। उन्होंने कहा कि इससे देश की 'ब्लू इकोनॉमी' को मजबूती मिलेगी और समुद्री संसाधनों के वैज्ञानिक उपयोग के नए रास्ते खुलेंगे। ICAR-NBFGR के निदेशक डॉ. काजल चक्रबर्ती ने इसे समुद्री जैव विविधता संरक्षण और आनुवंशिक संसाधनों के शोध के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बताया। उन्होंने कहा कि गहरे समुद्र के अब तक कम खोजे गए पारिस्थितिकी तंत्रों से प्राप्त जैव संसाधनों पर अनुसंधान भविष्य में कई नई संभावनाएं पैदा करेगा। कार्यक्रम के दौरान नई विकसित सेल लाइनों को ICAR-NBFGR के राष्ट्रीय भंडार में औपचारिक रूप से जमा किया गया तथा उनसे संबंधित वैज्ञानिक प्रकाशनों का भी विमोचन किया गया। इसे गहरे समुद्र की जैव विविधता पर भारत की बढ़ती वैज्ञानिक क्षमता का प्रतीक माना जा रहा है। इस अवसर पर सहयोगी अनुसंधान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ICAR-NBFGR ने इंडियन नेशनल सेंटर फॉर ओशन इंफॉर्मेशन सर्विसेज, सेंटर फॉर मरीन लिविंग रिसोर्सेज एंड इकोलॉजी और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटियोरोलॉजी के साथ समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए।